डॉ. मधु रानी शुक्ला ने अपनी शिक्षा वाराणसी में पूर्ण की। आपका बचपन से ही चित्रकला, नृत्य, संगीत के प्रति लगाव रहा सांगीतिक परिवार की न होते हुए भी आपने संगीत विषय को चुना आपने शास्त्रीय संगीत की विधिवत शिक्षा पं. देवानन्द पाठक जी से प्राप्त की है आपने स्नातकोत्तर की उपाधि संगीत गायन में प्राप्त की तथा प्रो. ऋत्विक सान्याल जी के निर्देशन में काकु विषय पर पीएचडी की उपाधि काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से पूर्ण की है। आपका संगीत के प्रायोगिक पक्ष व शास्त्र पक्ष दोनों के प्रति समान रूप से लगाव रहा है वर्ष 1992 में भारत सरकार की नेशनल स्कॉलरशिप, वर्ष 2003 में यूजीसी नेट की परीक्षा उत्तीर्ण की। शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त लोक संगीत के प्रति आपका झुकाव रहा। वर्ष 2011 में संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार की सीनियर फे़लोशिप प्राप्त की है जिसके तहत आपने सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश लोक गीत, गाथा व नाट्य के सांगीतिक विश्लेषण किया है। आपकी 10 पुस्तकें संगीत समाधान भाग 1, 2, 3, काकु का सांगीतिक विवेचन, लोक भाषा एवं संगीत, भारतीय सिनेमा की विकास यात्रा, गंगा की सांस्कृतिक स्वर लहरियाँ, अनहद बाजे री, कह़त कबीर, साधो रे नामक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकीं हैं। मीरा पर तीन पुस्तकें प्रकाशन में हैं। आपके लगभग 100 लेख, किताबों में चैप्टर, रिसर्च पेपर्स प्रकाशित हो चुके हैं। आप अन्तर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका अनहद लोक का संपादन भी करती हैं। सम्प्रति आप प्रयाग संगीत समिति प्रयागराज में संगीत शिक्षिका के पद पर कार्यरत हैं। आपको सा म प द्वारा अभिनव गुप्त सम्मान, सम संस्था द्वारा संगीत मनीषी सम्मान, संगीत संस्था हल्द्वानी द्वारा संगीत मनीषी सम्मान, उ म क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, द्वारा कला क्षेत्र में कार्य करने हेतु महिला दिवस पर दो बार सम्मानित करने के साथ ही रोटरी क्लब तथा लायंस क्लब द्वारा विशिष्ट शिक्षक, मंजूश्री संगीत संस्था नेपाल सम्मानों सहित सम्मान प्राप्त हो चुके हैं।

जनसंचार एवं पत्रकारिता से जुड़ी **शाम्भवी शुक्ला** शास्त्रीय संगीत, लोक संगीत एवं रंगमंच के क्षेत्र में भी अभिरुचि रखतीं हैं। आपने अनेक राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर के कलाकारों के कार्यक्रमों का संचालन एवं उनका साक्षात्कार किया है। व्यंजना आर्ट एंड कल्चर सोसायटी की सह-संयोजक हैं। आप भारतीय सिनेमा की विकास यात्रा', भारतीय सिनेमा 'विचारों का लोकतंत्र एवं स्त्री' 'गंगा की सांस्कृतिक स्वर लहरियां', 'लोक धुनों की फिल्मी यात्रा', 'कहत कबीर', 'अनहद बाजे री', 'साधो रे' व 'अनहद लोक' शोध पत्रिका की सह-संपादक हैं।

₹ 900

ISBN 978-93-93322-30-2

KANISHKA

कनिष्क पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स

4697/5-21ए, अंसारी रोड दरियागंज, नई दिल्ली-110002

फोन: 23270497, 23288285

ई-मेल: kanishka_publishing@yahoo.co.in

गूंजत मीरा वाणी मीराबाई के संगीत पक्ष पर एकाग्र

मधु रानी शुक्ला

KANISHKA

गूंजत मीरा वाणी

मीराबाई के संगीत पक्ष पर एकाग्र

सम्पादक

मधु रानी शुक्ला

सहसम्पादक

शाम्भवी शुक्ला

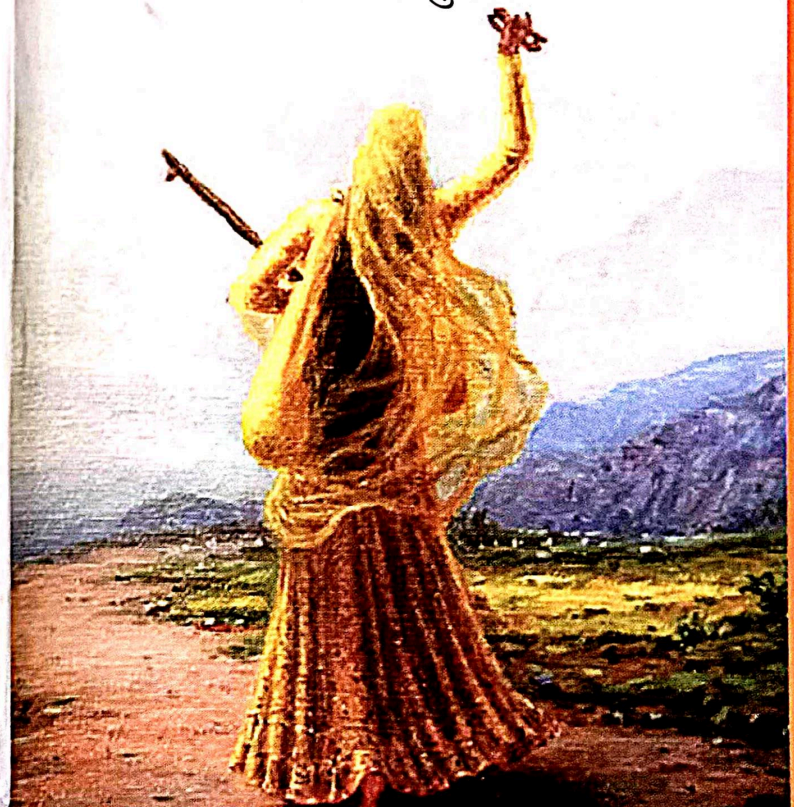

9. मीरा और संगीत
डॉ. चित्रा चौरसिया 54

10. भक्ति संगीत में मीरा के चयनित गीतः
करुण रस के संदर्भ में
डॉ. मलविन्दर सिंह मुखी 58

11. संत मीरा के पदों में संगीत
डॉ. मनदीप कौर 64

12. मीराबाई के पदों में संगीत
डॉ. नीलम अधिकारी 69

13. मुक्त संगीत की स्वच्छन्द धारा प्रवाहित करती–गीत की देवी मीराबाई
डॉ. प्रीति गुप्ता 76

14. संत मीराबाई के पदों में संगीत
डॉ. प्रियदर्शिनी उपाध्याय 82

15. मीराबाई के काव्य में लोक संगीत
डॉ. प्रियंका 88

16. एम.एस. सुब्बुलक्ष्मी की मीरा
डॉ. शिप्रा सरकार 94

17. एम.एस. सुब्बुलक्ष्मी एवं मीरा
डॉ. शिव नारायण मिश्र 98

18. मीराबाई के पदों में संगीत
अमरीष प्रजापति 102

19. भक्ति आंदोलन में मीराबाई का सांगीतिक योगदान
अनघा विजय पाटिल 108

20. मीराबाई काल में संगीत की स्थिति एवं वाद्यों की उपयोगिता
आरती सिंह 115

21. लोक परंपराओं में मीरा
डॉ. रामशंकर एवं अशोक कुमार 118

22. ललित कलाओं में "मीरा"
ध्वनि महस्कर 124

11

संत मीरा के पदों में संगीत

डॉ. मनदीप कौर

भारतीय संगीत की विशाल धरोहर भारत के सभ्य समाज में विकसित और परिपोषित हुई है। संगीत के प्राचीन शास्त्रीय ग्रन्थों के अध्ययन से यह प्रमाणित होता है कि वैदिक युग से लेकर वर्तमान समय तक संगीत की परम्परा किसी न किसी रूप में भक्ति और अध्यात्म की सुदृढ़ पृष्ठभूमि पर टिकी हुई है। मध्यकाल में संत कवियों तथा संगीतज्ञों ने समाज के अध्यात्मिक उत्थान के लिए कविता, गीत–नृत्य और कीर्तन संगीत को माध्यम बनाकर जन–जन में भक्ति की रसधारा प्रवाहित की। भक्त कवियों में कबीरदास, नानक, सूरदास, तुलसीदास, रसखान, नामदेव, कुम्भनदास, छीतस्वामी, संत रैदास, स्वामी हरिदास, रहीम तथा महिलाओं में अंडाल, मीराबाई आदि के नाम प्रमुख हैं। संत कवियों ने लोगों के सामने एक कर्मकाण्ड मुक्त जीवन का लक्ष्य रखा तथा हिन्दू–मुस्लिम एकता पर बल दिया। जाति बन्धन की जटिलता कुछ हद तक कम हुई जिसके परिणामस्वरूप दलित और निम्न वर्ग के लोगों में भी स्वाभिमान की भावना पैदा हुई, साथ ही संत कवियों के प्रयासों ने क्षेत्रीय भाषाओं को भी समृद्ध बनाया।

भक्ति काल में भक्ति की दो प्रमुख काव्य–धाराएँ मिलती हैं जिनके आगे दो–दो उप–विभाग हुए–

- **सगुण भक्ति**

  रामाश्रयी शाखा

  कृष्णश्रयी शाखा

- **निर्गुण भक्ति**

  ज्ञानाश्रयी शाखा

  प्रेमाश्रयी शाखा

"भक्तिकाल में भाषा और भाव, काव्य और संगीत का मणि–कांचन योग है। काव्य में संगीतात्मकता के सन्निवेश लिए जिस आत्मविश्वास, तीव्रानुभूति, सहज स्फूर्ति और अन्तः प्रेरणा की आवश्यकता होती है, भक्त कवियों में वह पर्याप्त मात्रा में विद्यमान थी।"[1] वास्तव में भक्तिकाल ही ऐसा काल है, जिसमें भारतीय संस्कृति की समग्र चेतनामयी वाणी को संगीतमय अभिव्यक्ति मिली। सूर, मीरा, तुलसी, कबीर, नानक, परमानन्द के पद भक्तों, साहित्य रसिकों और गायक सभी के मन को बहुत भाते थे और उनके कंठों में आज तक बसे हैं और आगे भी बसे रहेंगे। यह संगीत ही था जिसने संत साहित्य और उनके उपदेशों को साधारण जन तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। इस उद्देश्य की प्राप्ति में भक्तिकालीन संत परम्परा का बहुत ही महत्वपूर्ण योगदान है। इन संत कवियों तथा इनके शिष्यों ने गा–गा कर अपने उपदेशों को लोक तक पहुँचाया।

भक्तिकाल की कृष्णश्रयी शाखा की कृष्णमयी मीराबाई एक मध्यकालीन हिन्दू आध्यामिक महान् कवियित्री, अच्छी गायिका व संत भी थी। श्रीकृष्ण की इस महान् भक्त को "राजस्थान की राधा' भी कहा जाता है। मीरा का जन्म कब हुआ इस विषय में मीराकालीन कोई प्रामाणिक साक्ष्य उपलब्ध नहीं हैं। ऐसी मान्यता है कि मीराबाई का जन्म 1498 ई. में राजस्थान की मेड़ता जागीर के राठौड़ वंश के राव दादू के पुत्र रत्न सिंह के यहाँ कुड़की ग्राम में हुआ था। इनकी माता का नाम वीर कुमारी था। बचपन में ही माता की मृत्यु हो जाने के कारण इनके दादा–दादी ने ही इनका लालन–पालन किया। इनकी दादी श्रीकृष्ण की परम भक्त थी जिनके प्रभाव के कारण ही मीरा को बचपन से ही श्रीकृष्ण से मोह हो गया था और इसी मोह के कारण ही मीराबाई श्रीकृष्ण को अपना पति मानती थी।

मीराबाई की प्रारम्भिक शिक्षा मेड़ता में ही पूर्ण हुई तथा राजवंश से सम्बन्धित होने के कारण उन्हें समय–समय पर काव्य तथा संगीत के अभ्यास के अवसर भी प्राप्त होते रहे। मेवाड़ का राजवंश उस काल में संगीत राज के रचयिता, संगीत एवं

साहित्य के प्रेमी तथा प्रसिद्ध शास्त्रकार महाराणा कुंभा के कारण पूरा विख्यात हो चुका था। उनकी ससुराल में भी उन्हें अपनी योग्यता के विकास ने लिए अनुकूल वातावरण प्राप्त हुआ। मीरा ने एक हाथ में एकतारा लेकर अपने पदों तथा गीतों को गा–गा कर अपने इष्टदेव को रिझाने की चेष्टा की।

मीराबाई का विवाह उदयपुर के महाराणा कुमार भोजराज के साथ हुआ था। कहते हैं कि मीरा विवाह के लिए तैयार नहीं थी परन्तु परिवार के दबाव में उन्होंने यह विवाह किया था। विवाह के कुछ समय पश्चात् ही भोजराज की मृत्यु हो गई और मीरा अकेली पड़ गई। वे विरक्त होकर साधु–संतों की संगति में हरि कीर्तन करने लगी। मंदिरों में कृष्ण की मूर्ति के साथ नाचते–गाते वे अपना समय व्यतीत करती थी।

मीरा को गिरधर मिलया जी, पूरब जनम के भाग।
सुपणो में म्हारे परण गाया जी, हो गया अचल सुहाग।।

यही कारण है कि उनके ससुराल वालों ने नाराज़ होकर उन्हें कई बार मारने की कोशिश की।

मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई।
जाके सिर मोर मुकुट मेरो पति सोई।।

कृष्ण को आराध्य व पति परमेश्वर मानकर कविता करने वाली मीराबाई की पदावलियाँ हिन्दी काव्य के लिए अनमोल हैं। बाल्यकाल से ही मीरा कृष्ण भक्ति में रमी रहती थी और अक्सर कृष्ण की मूर्ति के आगे नाचती थी और भजन गाकर अपने आराध्य की भक्ति में अपना ध्यान लगाती थी। सुमित्रानन्दन पंत के शब्दों में "मीराबाई राजपूताने के मरूस्थल की मंदाकिनी है।" मीराबाई ने अनेक पदों व गीतों की रचना की। मीरा के पदों का विषय है श्रीकृष्ण के प्रति उनका अनन्य प्रेम, उनकी भक्ति तथा समर्पण की भावना तथा उनके पदों की विशिष्टता उनमें विद्यमान तीव्र विरह अनुभूति में निहित है–

हेरी मैं तो प्रेम दीवानी, मेरो दर्द ना जानो कोय।

मीराबाई ने अपने पदों में प्रेम के संयोग तथा वियोग दोनों पक्षों का बड़ा सुन्दर वर्णन किया है। मीराबाई की प्रमुख रचनाएँ नरसी जी रो मायरो, सोरठा के पद, राग गोविन्द तथा गीत गोविन्द टीका है, जिनमें मीरा ने राजस्थानी के अतिरिक्त गुजराती, पंजाबी, अवधि, मैथिली, भोजपुरी, अरबी, फारसी, संस्कृत और ब्रजभाषा का प्रयोग भी किया है। मीरा ने भी अन्य संतों की ही तरह कई भाषाओं का प्रयोग अपनी

रचनाओं में किया। मीरा के पदों में अहम् को समाप्त करके पूर्ण समर्पण का भाव है तथा अपने आराध्य से पूर्ण मिलाप की तीव्र इच्छा है।

राजस्थानी– मरगिया बुहारो म्हें, फुलड़ा बिछावां,
म्हीने कृष्ण जी रा, दर्शन होयो म्हारा राम।

गुजराती– हे री मैं तो प्रेम–दीवानी मेरो दरद ना जाणै कोय।
घायल की गति घायल जाणै, जो कोई घायल होय।

पंजाबी– आवदा जांवदा नजर न आवै।
अजब तमाशा इस दा नी।।

मीरा के पद मन की गहरी पीड़ा, विरहानुभूति और प्रेम की तन्मयता से भरे हुए हैं। भावावेग, भावनाओं की मार्मिक भावाभिव्यक्ति, प्रेम की ओजस्वी प्रवाह धारा, प्रीतम वियोग की पीड़ा से अपने पदों को अलंकृत करने वाली प्रेम की साक्षात मूरत मीरा के समान शायद ही कोई कवि हो। मीरा की भाषा मौलिक है तथा उनकी कविता में सादगी का सौन्दर्य है। मीरा की भाषा में श्रीकृष्ण की जन्मभूमि की ब्रजभाषा के संगम से उनकी भाषा भी उन्हीं की तरह कृष्णमयी हो गई प्रतीत होती है।

उपरोक्त उदाहरणों से स्पष्ट है कि मीराबाई ने अपनी रचनाओं में सरल, सहज तथा आम बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया है, जिसमें राजस्थानी, गुजराती, ब्रज का मिश्रण तथा कहीं–कहीं पंजाबी भाषा का प्रयोग भी दिखाई देता है। इन सभी भाषाओं का लोकसंगीत बहुत समृद्ध है। अतः भाषा की दृष्टि से मीराबाई के पद गायन के लिए उपयुक्त माने जाते रहे है। मीरा की भाषा में कोमलता, मधुरता और सरसता के गुण विद्यमान हैं। काव्य की पदावली कोमल, भावानुकूल व प्रवाहमयी है। किसी भी काव्य को भजन अथवा गीत का रूप देने के लिए उपरोक्त तीनों गुण अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। मीरा के पदों में अनुप्रास, दृष्टान्त, पुनरूक्तिप्रकाश और रूपक आदि अलंकारों का सहज प्रयोग दिखाई देता है। मीरा के पदों में भक्तिरस का बाहुल्य है, साथ ही भक्तिभाव के कारण शांत रस भी व्याप्त है तथा प्रसाद गुण के प्रयोग से भावाभिव्यक्ति में सहायता मिलती है। एक–एक पद भक्ति की पराकाष्ठा को प्रदर्शित करता है। सभी पद तुकांत, लय युक्त तथा गेयात्मक हैं। इनके पदों में अलंकारों की सहजता और गेयता अद्भुत है जो सर्वत्र मार्धुय गुण से ओत–प्रोत है। स्वयं को गिरधर नागर की दासी मानने वाली मीराबाई के पद, दोहे और भजन उनकी सच्ची मार्मिक भक्ति का काव्यात्मक रूप है।

मीराबाई के काल यानि मध्यकाल में राग–रागिनी पद्धति प्रचलित थी, जिससे मीराबाई भली प्रकार से परिचित थी। उन्होंने अपनी वाणी का उच्चारण रागों में किया

है। "संगीत में रूचि रखने वाली मीरा के पदों में 90 राग–रागिनियों का प्रयोग मिलता है।"[2]

मीरा के पदों में अधिकतर भैरव राग का प्रयोग देखा गया है।

बसो मेरे नैनन में नंदलाल।
मोहनी मूरत, साँवर, सूरति नैना बने विसाल।।
अधर सुधारस मुरली बाजति, उर बैजंती माल।
क्षुद्र घंटिका कट–तट सोभित, नूपुर शब्द रसाल।
मीरा प्रभु संतन सुखदाई, भक्त बछल गोपाल।।

"सोरठ के पद" नामक मीरा की रचना में मीराबाई के अतिरिक्त भक्त नामदेव तथा कबीर जी के राग 'सोरठ' में बद्ध पदों को संग्रहित किया गया है। श्री के.एस. झवेरी जी ने गुजरात में प्रचलित बहुत से "गरबा गीतों" को मीरा रचित माना है। 'गरबा' गीत रास मण्डली के गीत की भांति गाये जाते हैं। मीराबाई के ऐसे गीतों को 'मीरानी गरबी' कहा जाता है, किन्तु उसकी प्रामाणिकता पर संदेह भी किया जाता है।"[3] मीरा ने गीतात्मक शैली का अनुसरण करके अपने काव्य अथवा पदों की रचना की। उनकी शैली को गायन के लिए उपयुक्त काव्य की शैली कहा जा सकता है, जिसमें गेयता, भावों तथा अनुभूति की तीव्रता तथा संगीतात्मकता विद्यमान है।

एक हाथ से एकतारा बजाते हुए, उसका आधार स्वर लेकर कृष्ण की भक्ति में लीन नाचती गाती मीराबाई पूर्ण रूप से संगीतमयी नज़र आती हैं। मीरा के पद संगीतपरक है तथा राग–रागिनियों में आबद्ध हैं, जिनमें संगीत, लय, तुक आदि का समन्वय है।

संदर्भ सूची

1. डॉ. शिवकुमार शर्मा, हिन्दी साहित्य: युग और प्रवृत्तियाँ, पृ. 297, अशोक प्रकाशन, दिल्ली।
2. श्रीमती किन्शुक श्रीवास्तव, राजस्थानी लोकसंगीत की लोकप्रियता एवं प्रभाव, संगीत, जून 2015, पृ. 15 ।
3. मीरा परिचय–स्त्री शक्ति–मीरा, http://strishaktimeera.com/meera-parichay/